मण्डल की पृष्ठभूमि

1. मण्डल की संरचना –

वर्ष 1997–98 के पूर्व मेरठ मण्डल में 6 जनपद क्रमशः हरिद्वार, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, गाजियाबाद तथा बुलन्दशहर थे। परन्तु वर्ष 1997–98 के प्रथम त्रैमास में जनपद हरिद्वार, सहारनपुर तथा मुजफ्फरनगर को मिलाकर एक नया मंडल सहारनपुर सृजित कर दिया गया। इस प्रकार विभाजन के पश्चात मेरठ मण्डल में तीन जनपद क्रमशः मेरठ, गाजियाबाद तथा बुलन्दशहर शेष रह गये। इसके पश्चात जनपद गाजियाबाद तथा बुलन्दशहर को विभाजित कर एक नया जनपद "गौतमबुद्धनगर" तथा जनपद मेरठ को विभाजित कर दूसरा नया जनपद "बागपत" सृजित किया गया। इस प्रकार वर्तमान में मेरठ मण्डल के अन्तर्गत 5 जनपद क्रमशः मेरठ, बागपत, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर तथा बुलन्दशहर हैं।

2. भौगोलिक विशेषतायें –

मेरठ मण्डल उत्तर प्रदेश के मैदानी भाग के उत्तर पश्चिम भाग में स्थित है। मण्डल की पूर्वी सीमा में गंगा नदी तथा पश्चिम में यमुना नदी बहती है। अतः यह मण्डल गंगा–यमुना के दोआब में स्थित है। मण्डल की उत्तरी सीमा में सहारनपुर मण्डल के जनपद मुजफ्फरनगर, दक्षिण में आगरा मण्डल के जनपद अलीगढ़, पूर्व में मुरादाबाद एवं बरेली मण्डल के जनपद बदाँयू तथा पश्चिम में जनपद गुड़गाँव, दिल्ली, रोहतक तथा सोनीपत की सीमायें मिलती हैं। सम्पूर्ण मण्डल 77°–78° अक्षांश तथा 28°–30° देशान्तर के बीच स्थित है। मण्डल के 5 जनपद क्रमशः मेरठ, बागपत, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर तथा

बुलन्दशहर उत्तर से दक्षिण दिशा में स्थित हैं।

वर्तमान में मण्डल का भौगोलिक क्षेत्र 10853 वर्ग कि०मी० है जो प्रदेश के सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल का 4.50% है। मण्डल में जनपद बुलन्दशहर का क्षेत्र 4352 वर्ग कि०मी० सबसे अधिक है तथा जनपद बागपत का क्षेत्रफल 1321 वर्ग कि०मी० सबसे कम है।

3. जनसंख्या –

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार मण्डल की कुल जनसंख्या 115.67 लाख है, जो प्रदेश की जनसंख्या का 6.96% है। इसमें से 62.04 लाख 53.64 पुरुष तथा 53.63 लाख 46.36% स्त्री है। मंडल की कुल जनसंख्या में से 69.45 लाख 60.04% व्यक्ति ग्रामों में तथा 46.22 लाख 39.96% व्यक्ति नगरीय क्षेत्रों में निवास करते हैं। मण्डल की कुल जनसंख्या में से 39.31 लाख 53.65% व्यक्ति साक्षर हैं।

4. जलवायु –

मण्डल में जलवायु समशीतोष्ण है। सर्दी के मौसम में न तो अधिक सर्दी और न गर्मी के मौसम में न ही अधिक गर्मी पड़ती है और वर्षा ऋतु में न अधिक वर्षा होती है। माह नवम्बर से मार्च तक मौसम आनन्दायक एवं स्वास्थ्यवर्द्धक रहता है। अप्रैल माह में गर्म हवायें चलने लगती हैं, जो सामान्यत: जून तक रहती हैं। इससे वायुमण्डल गर्म हो जाता है, परन्तु स्वास्थ्य के लिये बहुत अधिक हानिकारक नहीं है। जून माह के अन्त में वायुमण्डल में पूर्वी हवाओं के कारण आद्रता हो जाती है। यह वर्षा ऋतु के आगमन का संकेत है। वर्षा ऋतु जून के अन्त में सितम्बर तक रहती है। पूर्वी क्षेत्रों की अपेक्षा इस मण्डल की जलवायु

सुखद एवं स्वास्थ्यवर्द्धक है।

कलेण्डर वर्ष 2005 में जनपद मेरठ में 665 मि०मी०, जनपद बागपत में 544 मि०मी०, जनपद गाजियाबाद में 702 मि०मी०, जनपद गौतमबुद्धनगर में 1051 मि०मी० तथा जनपद बुलन्दशहर में 458 मि०मी० वर्षा हुई। उपरोक्त से स्पष्ट है कि वर्ष 1999 में मण्डल के जनपद बुलन्दशहर में सबसे अधिक तथा जनपद बागपत में सबसे कम वर्षा हुई।

5. प्रशासनिक ढाँचा –

मण्डल के 5 जनपदों में 20 तहसील, 46 सामुदायिक विकासखण्ड, 403 न्याय पंचायत तथा 2234 ग्राम पंचायत स्थित हैं। इसके अतिरिक्त मण्डल में 3168 ग्राम, 2 नगर महापालिका, 20 नगर पालिका, एक छावनी क्षेत्र, 33 नगर क्षेत्रसमिति तथा 9 सेन्सस टाउन स्थित हैं।

6. उद्योग –

चीनी, रबर टायर, हथकरधा, कैंची, खेल का सामान, दुग्ध उत्पादन, कृषि उपकरण, विद्युत उपकरण (ट्राँसफार्मर) खॉडसारी, टैक्सटाइल, इलैक्ट्रोनिक्स, इंजीनियरिंग, वनस्पति, डिस्टलरी, यार्न, कालीन, पोट्रीज आदि मण्डल के प्रमुख उद्योग हैं। नवसृजित जनपद गौतमबुद्धनगर में नोयडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण तथा ग्रेटर नोयडा विकास प्राधिकरण के द्वारा औद्योगिक विकास किया गया है तथा अभी और अधिक विकसित किया जा रहा है और उद्योगों की स्थापना की जा रही है। तेजी से विकसित हुये नोयडा क्षेत्र ने मंडल को प्रदेश में ही नहीं अपितु भारत में विशिष्ट स्थान दिला दिया है।

7. प्रमुख ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थान –

भारतीय इतिहास में मण्डल का गौरवपूर्ण स्थान है। पुराण एवं इतिहास साक्षी हैं कि गंगा–यमुना के पावन जल से अभिषिक्त यह भूमि (मयराष्ट्र भूमि) महाकाव्य काल से आज तक यथोनिठ ऋषियों तथा मेघावान मनीषियों की साधना स्थली रही है। मण्डल के प्रमुख ऐतिहासिक व धार्मिक स्थल जनपदवार निम्न प्रकार हैं :–

जनपद – मेरठ

1. औघड़नाथ मन्दिर (काली पलटन) –

धार्मिक स्थल भगवान औघड़नाथ का मन्दिर काली पलटन के नाम से जाना जाताहै। यह 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की अमरगाथा का प्रतीक है।

2. बिल्केश्वरनाथ मन्दिर –

मेरठ का सबसे प्राचीन मंदिर है कहा जाता है कि मन्दोदरी इस मंदिर में पूजा के लिये आती थी।

3. शहीद स्मारक –

मैसाली मैदान के पास सफेद पत्थर से निर्मित 120 फीट लम्बा जिसके ऊपरी सिरे पर अशोक चक्र एवं चिन्ह बना है जो 1857 में शहीद हुए स्वतन्त्रता सेनानियों की याद दिलाता है।

4. गगोल –

मेरठ औद्योगिक क्षेत्र परतापुर के समीप गगोल ग्राम में एक वृहद कुण्ड है। विश्वास किया जाता है कि महाऋषि विश्वामित्र ने इसी स्थल पर यज्ञ किया था।

5. सरधना –

मेरठ से 22 कि०मी० दूर स्थित सरधना विश्व प्रसिद्ध कैथोलिक चर्च के लिये प्रसिद्ध है। इसका निर्माण सन् 1811 में बेगम समरू ने कराया था। बेगम समरू का महल तथा भव्य चर्च देखने योग्य है।

6. परीक्षितगढ़ –

23 कि०मी० की दूरी पर स्थित परीक्षितगढ़ ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण राजा परीक्षित की राजधानी रहा है। इसके अतिरिक्त यहाँ नवलदे कुआँ, गान्धारी तालाब, श्रँगी ऋषि आश्रम जनमानस के श्रद्धा के केन्द्र हैं।

7. हस्तिनापुर –

37 कि०मी० की दूरी पर स्थित हस्तिनापुर वर्तमान में जैन तीर्थ स्थल के रूप में विकसित है। कौरव–पाण्डव युद्ध की पुराण प्रसिद्ध रंगभूमि व अनेक चक्रवर्ती सम्राटों के आसेतु हिमालय साम्राज्य बनाने का गौरव इसको प्राप्त है। यहाँ जैन सम्प्रदाय का जम्बूद्वीप एवं पाण्डेश्वर मंदिर दर्शनीय है।

8. सैफपुर करमचन्दपुर –

हस्तिनापुर की यह तपोभूमि एक ऐसी भूमि है जहाँ से सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिक्ख धर्म की नींव को ऊपर चलाने वालों का जन्म हुआ था। इस भूमि के कण–कण में अध्यात्म पूरी तरह समाया हुआ है। खालसा पंथ को अभी हाल ही में गुरूवाणी से पता चला है कि हस्तिनापुर क्षेत्र के ग्राम सैफपुर करमचन्दपुर में खालसा पंथ के पंच प्यारों में से दूसरे गुरू भाई श्री धर्म सिंह जी का जन्म हुआ था। खालसा पंथ की स्थापना के संबंध में कहावत है कि स्थापना के समय गुरू गोविन्द सिंह ने विभिन्न प्रदेशों में से एक–एक प्यारे का चयन

करके पहले उनको अमृत छकाया था। उसके बाद में खुद उनसे अमृत छका था। अब पंच प्यारे भाई धर्म सिंह जी की जन्म स्थली का पता चलने से इस गाँव का धार्मिक एवं ऐतिहासिक क्षेत्र में काफी महत्व बढ़ गया है।

9. मवाना –

जनश्रुतियों के अनुसार महाभारत काल के प्रसिद्ध आखेटक "माना" ने इस ग्राम को बसाया था और किवदन्ती के अनुसार हस्तिनापुर के प्राचीन नगर का यह मुख्य द्वार था। इसका प्राचीन नाम "महाना" था जो अपभ्रंश होकर मवाना हुआ।

जनपद – बागपत

1. पुरा महादेव –

हिन्डन नदी के किनारे ग्राम पुरा में भव्य परशुराम शिवलिंग मंदिर विद्यमान है। जनश्रुति के अनुसार परशुराम ने यहाँ पर शिव मंदिर की स्थापना की थी। आज भी यहाँ पर शिवरात्रि के अवसर पर लाखों काँवडिये हरिद्वार, गंगोत्री आदि स्थानों से गंगाजल लाकर शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। इसी स्थान पर सामने हिन्डन नदी के दूसरे तट पर परशुराम में सहस्त्रबाहु का वध किया था।

2. बालैनी –

प्राचीन काल में यह स्थान कुशस्थली के नाम से विख्यात था। किवदन्ती के अनुसार ऋषि बाल्मीकी का यहाँ पर आश्रम था और यहाँ [illegible]

जनपद – गाजियाबाद

1. गढ़मुक्तेश्वर –

गंगा नदी के किनारे स्थित गढ़मुक्तेश्वर हिन्दुओं का प्राचीन तीर्थ स्थल है। नारद पुराण के अनुसार शंकर भगवान ने विष्णु भगवान के जय विजय नामक गणों का उद्धार इसी स्थल पर किया था। यहाँ गढ़मुक्तेश्वर मंदिर, झारखंडेश्वर मंदिर, नक्का (नुहुष कूप) पूजनीय एवं दर्शनीय स्थल हैं।

2. ब्रजघाट –

कहा जाता है कि गंगा नदी के किनारे स्थित इस स्थल पर अनेक संत महात्माओं, धर्माचार्यों ने साधना की थी। इस स्थल पर अनेक भव्य मंदिर विद्यमान हैं तथा ब्रजघाट एक प्रमुख तीर्थ स्थल है।

3. दूधेश्वरनाथ मंदिर –

गाजियाबाद नगर में स्थित इस मंदिर के संबंध में कहा जाता है कि विश्रवा मुनि की गायें चरने के लिये इस स्थान पर जब आती थीं तो उनके थनों से दूध अपने आप निकल जाता था। विश्रवा मुनि को इस तथ्य का पता लगने पर उनके द्वारा इस स्थान की खुदाई कराई गई। कहा जाता है कि जैसे–जैसे खुदाई होती जाती इस स्थान पर भूगर्भ में स्थापित शिवलिंग भूमि के और अन्दर चला जाता था। आज भी इस स्थान पर शिवलिंग भूमि की सतह से काफी गहराई में स्थापित है।

[illegible]